IJAER/ July-August 2022/Volume-11/Issue-4 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

''जनसंख्या शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य, महत्व, आश्यकता, समस्याऐं एवं विशेषताओं का समीक्षात्मक अध्ययन''

Saroj Yadav
Research Scholar Singhania University, Pacheri Bari (Jhunjhunu) Raj.

Dr. Sunita Yadav
Supervisor Professor Singhania University, Pacheri Bari (Jhunjhunu) Raj.

सार :–

वर्तमान युग विस्फोटों का युग है जनसंख्या विस्फोट में प्रगति और विकास के मार्ग में बाधा खड़ी कर दी है। समाज शास्त्री जनसंख्या के कारण मानव अस्तित्व के भविष्य के बारे में चिंतित हो उठे हैं। जनसंख्या वृद्धि प्रमुख मानवीय समस्या के रू‍ में उदित हुई है। इससे जीवन का प्रत्येक पक्ष प्रभावित हुआ है। व्यक्तिगत रूप में व्यक्तियों के स्वभाव, स्वास्थ्य, धन व प्रसन्नता पर इसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। जनसंख्या विस्फोट के कारण राष्ट्रीय आय और उत्पादन के प्रभावित होने से राष्ट्रीय प्रगति अवरूद्ध हुई है अंतराष्ट्रीय रंगमंच पर शांति और सुरक्षा का प्रष्न व्यापक होने लगा है। व्यक्ति और समाज के समाने इस समस्या ने रोटी, कपड़ा और मकान जैसी प्राथमिक आवष्यकताओं की पूर्ति में बाधा उत्पन्न की है। विष्व के अनेक राष्ट्रों में मानव जीवन के स्तर में गिरावट का प्रमुख कारण भी जनसंख्या वृद्धि है। अनेक सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक तथा शैक्षिक समस्याओं का मूल भी जनसंख्या विस्फोट अथवा जनंसख्या वृद्धि की समस्या और अधिक गंभीर समस्या होने का मत अनेक वैज्ञानिकों ने लिया है। डॉ. लल्ला के अनुसार ''जनसंख्या विस्फोट की गंभीरता समस्या ने हमारे समय के हमारे विष्व को मुसीबत में फंसा दिया है।''

पिछले दो दषकों से भारत की जनंसख्या वृद्धि दर में गिरावट नजर आयी है परन्तु सम्पूर्ण राष्ट्र में गिरावट के बावजूद भारत की कामकाजी उम्र की जनसंख्या में वृद्धि दर्ज की गई है साथ ही स्कूली षिक्षा में प्रवेष प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में भी तेजी से वृद्धि हुई है। जिसके कारण आर्थिक संकट एवं बेरोजगारी की समस्या विकराल रूप धारण करके वृद्धि को अवरूद्ध कर रही है। जिससे जनसंख्या षिक्षा की आवष्यकता महसूस की जा रही है।

यूनेस्कों के अनुसार ''जनसंख्या षिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है जो परिवार, समुदाय, राष्ट्र और विष्व की जनसंख्या की स्थिति के अध्ययन के लिए छात्रों में उस स्थिति के प्रति तर्क संगत और जिम्मेदार दृष्टिकोण और व्यवहार विकसित करने के उद्देष्य से प्रदान की जाती है।

परिचय

जनसंख्या शिक्षा से अभिप्राय विद्यार्थियों को जनंसख्या संबंधित शिक्षा देना है यह विद्यार्थियों में जनसंख्या तथा परिवार नियोजन संबंधी मौलिक चेतना उत्पन्न करने के उद्देश्य से दी जाती है। संक्षेप में यह शिक्षा प्रविधि है जिसके द्वारा जनसंख्याओं की समस्याओं संबंधि आधारभूत चेतना तथा नियोजित परिवार के प्रति सहयोगी अभिवृतियों का विकास स्कूल और कॉलेजों द्वारा किया जा सकता है।

भारत में 15 वष से कम आयु के बच्चा की संख्या वर्तमान में बहुत अधिक है। यही बड़े होकर विवाह करके माता–पिता बनेंगे इनको परिवार के आकार के विषय में निर्णय करना है। जिसका जनसंख्या वृद्धि से सीधा संबंध है। अतः इस वर्ग के बच्चों को बढ़ती

जनंसख्या के दुष्प्रभाव से अवगत कराना आवश्यक है। जिससे वे अपने भावी परिवार के आकार के विषय में निर्णय कर सके। साथ ही इस युवा पीढ़ी को लघु परिवार के विचार के प्रति आकृष्ट करना आवश्यक है। जिससे वे प्रौढ़ अवस्था में अपने परिवार को समिति कर सके। यही कार्य जनसंख्या शिक्षा के माध्यम से किया जाता है। जनंसख्या शिक्षा देकर बच्चों को बताया जा सकता है संतान उत्पत्ति को नियंत्रित किया जा सकता है। इस प्रकार जनसंख्या शिक्षा वह शिक्षा है जिसमें युवा पीढ़ी के लोगों की जनसंख्या की गति, उसकी दिशा तथा देश के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन, उसके प्रभाव और परिवार के आकार, छोटे परिवार के लाभ आदि की जानकारी प्रदान की जाती है। जनसंख्या शिक्षा को निम्न परिभाषाओं से परिभाषित किया जाता है।

डंकन के अनुसार – ''वातावरण में परिवर्तन, जनसंख्या की संरचना में परिवर्तन, जनसंख्या की समस्या से झूझने के उपाय तथा कारकों की पारपंरिक्ता से परिस्थिति संकुल बनते हैं और संकुलों का लेखा–जोखा ही शिक्षा है।''

यूनेस्को वर्कशॉप के अनुसार – ''जनसंख्या शिक्षा एक शैक्षिक कार्यक्रम है। जिसमें परिवार समाज, राष्ट्र एवं विश्व की जनसंख्या का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्रों में इस स्थिति के प्रति विवेकपूर्ण, उतरदायित्वपूर्ण, दृष्टिकोण एवं व्यवहार को विकसित करना है।''

▶ भारत में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति का आंकलन

भारत में स्वतंत्रता के बाद जनसांख्यिकीय संरचना में भारी परिवर्तन आया है। जिसमें धीरे–धीरे जनसंख्या विस्फोट का स्वरूप धारण कर लिया है। जिसका आंकलन निम्न आंकड़ों से ज्ञात किया जा सकता है।

1. भारत में प्रत्येक डेढ़ सैकेंड के बाद एक बच्चे का जन्म होता है।
2. विश्व का प्रत्येक सातवां व्यक्ति भारतीय है या पूरे विष्व की जनंख्या का सातवां भाग भारत में निवास करता है।
3. भू–भाग की दृष्टि से विष्व का 2.4 प्रतिषत हिस्सा ही हमारे पास है।
4. भारत की वर्तमान जनसंख्या 139.44 करोड़ है जो कि 2030 तक 150 होने की संभावना है।
5. भारत का प्रतिवर्ग किलोमीटर जनसंख्या का घनत्व 178 है जबकि विष्व का औसत 27 ही है।
6. भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर 65000 प्रति दिन है। जबकि विकसित देषो में 1500 प्रतिदिन है।
7. भारत में प्रतिवर्ष 21 करोड़ बच्चों का जन्म होता है। जिनमें से 13 करोड़ जीवित बचते हैं।
8. भारत में प्रतिव्यक्ति आय 669 रू. जो विष्व में न्यूनतम है।
9. वर्तमान में भारत की जनसंख्या का लगभग 42 प्रतिषत भाग 15 वर्ष से कम आयुवर्ग के बच्चों का है।
10. जनसंख्या के साथ बेरोजगारी की संख्या 192.78 लाख अनुमानित आंकी गई है।
11. सरकार तथा अन्य संस्थानों के अथक प्रयासों के बावजूद भी साक्षरता का प्रतिषत वर्तमान तक भी संतोषजनक स्थिति में नहीं है।

उपरोक्त समस्त तथ्यों से भारत की जनसंख्या संबंधित परिस्थितियों का आंकलन लगाकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उपरोक्त सभी स्थितियां जनसंख्या वृद्धि के विस्फोटक स्तर को प्रदर्षित करती है।

▶ जनसंख्या षिक्षा के उद्देष्य :–

1. बालकों को इस तथ्य से परिचित कराना कि लघु एवं संगठित परिवार के द्वारा ही सभी सदस्यों के कल्याण एवं स्वास्थ्य की रक्षा की जा सकती है।
2. छात्रों को इस बात की जानकारी देना कि बच्चों की संख्या पर नियंत्रण किया जा सकता है और परिवार को छोटा रखा जा सकता है।
3. छात्रों को जनसंख्या तथा गुणात्मक जीवन के घनिष्ट संबंध को स्पष्ट करना ।
4. पारिवार की आर्थिक स्थिरता के लिए लघु एवं संगठित परिवार के महत्व से छात्रों को अवगत कराना।

5. छात्रों को आधुनिक विष्व की सबसे महत्वपूर्ण घटना के रूप में जनसंख्या वृद्धि की गति एवं कारणों से अवगत कराना।

6. बालकों को छोटा परिवार सुखी परिवार की महत्वता को समझाना।

7. बलकों को व्यक्ति, परिवार, समुदाय, देष तथा विष्व के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक जीवन पर जनसंख्या वृद्धि के पड़ने वाले प्रभावों की जानकारी देना।

8. छात्रों को आर्थिक विकास के साथ –साथ जनसंख्या का संबंध, परिवार कल्याण प्रतिव्यक्ति आय, गंदी बस्तियों की वृद्धि, खाद्य समस्या, कुपोषण आदि के बारे में जानकारी देना।

संक्षेप में यह कह सकते हैं कि जनसंख्या षिक्षा का उद्देष्य बालकों में प्राथमिक आवष्यकता के संसाधनों, पर्यावरण तथा शहरी व ग्रामीण क्षेत्रा में बढ़ते जनसंख्या घनत्व के कारण उत्पन्न सामाजिक व आर्थिक समस्याओं का अवबोद्य कराना है। जिससे जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं की पूर्व जानकारी होने से बालक समय रहते जनसंख्या के भयावह दुष्प्रभावों से बच सके।

▶ जनसंख्या षिक्षा की आवष्यकता :–

जनसंख्या षिक्षा की आवष्यकता से अभिप्राय यह है कि जनसंख्या षिक्षा क्यो प्रदान की जाय। इससे यह स्पष्ट है कि आज जनसंख्या इतनी तीव्र गति से बढ़ रही है कि भौतिक साधनों का विकास पीछे छुटता जा रहा है तथा भौतिक साधनों व जनसंख्या के मध्य असंतुलन बढ़ रहा है। जिससे समस्याऐं शोषण व उत्पीडन को बढ़ावा मिल रहा है। सामाजिक अन्याय बढ़ रहा है अतः इन परिस्थितियों से निपटने के लिए षिक्षा शास्त्री यह अनुभव करने लगे हैं कि इस समस्या को वैचारिक क्रांति का रूप प्रदान करना होगा। अतः जनसंख्या षिक्षा की आवष्यकता को महसूस किया जाने लगा है। जनसंख्या षिक्षा की आवष्यकता के पक्ष में अन्य तर्क निम्न प्रकार है :–

1. संस्कृति एवं संस्कारों के पोषण के लिए – षिक्षा सभी प्रकार के संस्कारों और प्रयोगों की मूल भूमि होती है। जनसंख्या षिक्षा को व्यवहार और आचरण की प्रक्रिया में शामिल करके मानव के चरित्र का हिस्सा बनाना आज के समय की सबसे बड़ी आवष्यकता है। क्योंकि बालक पालक और अध्यापक सब मनुष्य की संस्कृति के पोषक है और षिक्षा में जिस संस्कृति का समावेष होगा वहीं से जीवन की गुणवत्ता की बात निर्मित होने लगेगी। इसलिए संस्कारों का प्रवाह षिक्षा से ही प्रारंभ होता है। यही कारण है कि जनसंख्या षिक्षा में षिक्षा में प्रविष्ठ किया गया है।

2. सीमित परिवार की आवष्यकता के लिए – छोटा परिवार सदैव ही सुखी होता है। परिवार का आकार जितना संक्षिप्त होता है वह परिवार उतना ही समृद्ध एवं सुखी तथा हरा–भरा होगा। साथ ही वहां बच्चों का मानसिक विकास भी पूर्णरूपेण होता है। भारत में विवाह की आयु अन्य देषों की अपेक्षा कम है। अतः युवक एवं युवतियों को विवाह से पूर्व जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याओं से अवगत कराना आवष्यक है। जनसंख्या षिक्षा द्वारा बालक बालिकाओं में यह विचार इस प्रकार समाविष्ट कर दिया जावे कि वह अपनी समझ–बूझ से अपने परिवार को स्वयं नियोजित कर सके।

इस प्रकार जनसंख्या षिक्षा प्रदान करके समय रहते विद्यार्थियों में सुखद जीवन एवं समृद्ध राष्ट्र के प्रति जागरूकता स्थापित की जा सकती है। इसलिए जनसंख्या षिक्षा की आवष्यकता महसूस की जाती है।

▶ जनसंख्या षिक्षा की विषेषताऐं :–

1. जनसंख्या षिक्षा अन्य विषयों की तरह स्वतंत्र विषय के रूप में अध्ययन नहीं करवाया जा रहा है। इसे अन्य विषयों के साथ मिलाकर ही अध्ययन करवाया जाना सुसंगत प्रतीत होता है। इसलिए यह अन्य विषयों की तरह ही महत्वपूर्ण विषय साबित होता है।

2. जनसंख्या षिक्षा का आधार जनसंख्या वृद्धि समस्या पर आधारित है। जिस कारण जनसंख्या षिक्षा के स्थिर व ठोस मान्यताओं पर आधारित नहीं होने के कारण लचिली पद्धति के कारण क्षेत्रीय आवष्यकताओं के अनुरूप ही षिक्षा की व्यवस्था की गई। षिक्षा की व्यवस्था की जाये।

3. जनसंख्या षिक्षा उन समस्त समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है। जो मानव की अपनी प्रगति के साथ साथ देष की उन्नति को भी विकसित करने में सहायक है साथ ही जनसंख्या षिक्षा से आर्थिक व सामाजिक स्तर में भी समृद्धि होती है।

4. जनसंख्या षिक्षा का संबंध मानव के गुणात्मक दृष्टिकोण से जीवन स्तर में उन्नति लाना है। इसलिए जनसंख्या विस्फोट को रोक कर लोगों में जागृति पैदा करके इस समस्या का हल षिक्षा के माध्यम से उचित प्रतीत होता है।

जनसंख्या नियंत्रण संबंधि उपरोक्त सभी कार्यक्रम तभी कारगर साबित हो सकते हैं जबकि इसमें षिक्षा का समावेष किया जाये।

अतः वर्तमान कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक तथा प्रभावीढंग से लागू करने के लिए स्कूल तथा कॉलेज स्तर पर जनसंख्या षिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाने से ही इस भयावह समस्या का आसान समाधान संभव है।

▶ जनसंख्या षिक्षा की समस्याऐं :–

जनसंख्या षिक्षा का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या की वृद्धि की गति, स्वरूप, व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विष्व पर पड़ने वाले उनके प्रभावों का अध्ययन सम्मिलित है। अतः जनसंख्या षिक्षा की समस्याऐं अत्यन्त जटिल एवं उलझी हुई है।

1. जनसंख्या षिक्षा संबंधित विषय वस्तु की समस्या :– जनसंख्या षिक्षा की विभिन्न षिक्षा स्तरों पर क्या विषय वस्तु हो, यह अभी तक स्पष्ट नहीं है। सभी स्तरों पर जनसंख्या षिक्षा से संबंधित साहित्य का अत्यन्त अभाव है, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों को जनसंख्या वृद्धि के वास्तविक आंकड़ो और व्यक्ति, समाज व राष्ट्र के जीवन स्तर पर इसके प्रभावों का पूर्णज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता है। इसलिए विद्यालय स्तर पर जनसंख्या षिक्षा का समुचित प्रचार प्रसार नहीं हो पा रहा है।

2. जनसंख्या षिक्षा के लिए अध्यापकों की समस्या :– विद्यालय स्तर पर जनसंख्या षिक्षा को यदि प्रथक विषय के रूप में अध्ययन करवाया जाये तो षिक्षकों के अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक प्रषिक्षण की व्यवस्था करना अत्यन्त आवष्यक है, क्योंकि जनसंख्या षिक्षा की षिक्षण विधियों का ज्ञान कराये बैगर अध्ययन करवाना अनावष्यक होगा। साथ ही कम साहित्य होने के कारण पर्याप्त सामाग्री उपलब्ध नहीं हो पाती है। इसलिए षिक्षकों को जनसंख्या षिक्षा के बारे में अध्ययन करवाने में कठिनाई होती है।

3. जनसंख्या षिक्षा संबंधि शोध कार्य की समस्या :– भारत में जनसंख्या षिक्षा की स्थिति शैषव काल में है साथ ही यहां के सामाजिक स्थितियों के कारण सुषिक्षित व्यक्तियों को भी जनसंख्या वृद्धि के परिणामों एवं प्रभावों का पर्याप्त ज्ञान नहीं है। शोध के अभाव के कारण लोगों में अनेक प्रकार की भ्रांतियां है जिससे जनसंख्या षिक्षा के मार्ग में अनेक बाधाऐं आ रही है।

▶ निष्कर्ष :–

जनसंख्या षिक्षा जनसंख्या वृद्धि के भयावह स्वरूप को नियंत्रित करने का एक मात्र उपाय है। जिसके माध्यम से शहरीकरण ऊर्जा आवष्यकताओं, जंगल आवरण, जल उपलब्धता, पर्यावरण परिवर्तन तथा जीवन स्तर में आ रही गिरावट एवं सामाजिक व आर्थिक स्थितियों में होने वाले परिवर्तनों से बढ़ती गंदी बस्तियों एवं आपराधिकरण की प्रवृतियों में वृद्धि को रोकने तथा बेरोजगारी के स्तर में तीव्र वृद्धि तथा आर्थिक संसाधनों में भारी कमी के साथ ही जीवन स्तर की प्रत्याषा जन्म और मृत्यु के अनुपात में अंतर आदि ऐसे विषय है जिनका समाधान राष्ट्र की सरकारों एवं नीति निर्माणों के माध्यम से नियंत्रित नहीं हो पा रहा है। इसलिए यह आवष्यकता महसूस की जा रही है। षिक्षा के स्तर में बदलाव लाकर अध्यापकों को प्रषिक्षित करके जनसंख्या षिक्षा को अनिवार्य विषय के रूप में लागू किया जाये। जिससे राष्ट्र में जनसाख्यिकीय संरचना में प्राथमिक स्तर से परिवर्तन आना प्रारंभ हो। इसी से ही इस भयावह जनसंख्या विस्फोटक स्थिति का निदान संभव नजर आता है।

अतः जनसंख्या षिक्षा का अनिवार्य स्वरूप बनाया जाये तभी राष्ट्र सम्रद्ध एवं प्रतिव्यक्ति आय की स्थिति में सुधार तथा जीवन की प्राथमिक आवष्यकताओं को प्राप्त करना संभव होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्निहोत्री, रविन्द्र 2002 – आधुनिक भारतीय षिक्षा समस्याएँ एवं समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. प्रतियोगिता दर्पण/भारतीय अर्थव्यवस्था, नवम्बर 2011
3. द हिन्दू समाचार पत्र में प्रकाषित लेख मूविंग पॉलिसी अवे फ्रोम पॉपुलेषन कंट्रोल– 13.08.2022
4. सिन्हा बी.सी. एवं पुष्पा सिन्हा (2011) जनांकिकी के सिद्धांत। मयूर पेपर बैग्स, नई दिल्ली।
5. चौबे पी.के. (2000) – भारत की जनसंख्या नीति । कनिष्ठ प्रकाषन नई दिल्ली।
6. मिश्र प्रकाष (2012) – जनांकिकी, साहित्य पब्लिकेषन भवन, नई दिल्ली।
7. पी.के. वाटल – भारत में जनसंख्या की समस्या।
8. दत्त, रूद्र एवं के.पी.एम. सुन्दरम (2010) भारतीय अर्थ व्यवस्था एस.चन्द्र एण्ड कम्पनी नई दिल्ली।